अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 19.08.2023

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र–स्थिति द्वार।

(ख) परिहार विशुद्धि चारित्र–अंतर द्वार।

(ग) सामायिक चारित्र–परिणाम द्वार।

(घ) सूक्ष्म संपराय चारित्र–काम द्वार।

(ङ) छेदोपस्थापनीय चारित्र–गति-स्थिति-पदवी द्वार।

(च) सामायिक चारित्र–प्रव्रज्या द्वार।

(छ) यथाख्यात चारित्र–ज्ञान व लिंग द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) सन्निकर्ष किसे कहते हैं?

(ख) लेश्या द्वार–यथाख्यात चारित्र में लेश्याएं किस अपेक्षा से है?

(ग) यथाख्यात चारित्र–भाव द्वार लिखते हुए बतायें कि ये किस अपेक्षा से हैं?

(घ) प्रत्येक शब्द का क्या तात्पर्य है?

(ङ) यथाख्यात चारित्र–उपसंपदहान द्वार लिखें।

(च) आकर्ष किसे कहते हैं?

(छ) अल्पबहुत्व शब्द का क्या तात्पर्य है?

(ज) सूक्ष्म संपराय चारित्र–क्षेत्र द्वार–संहरण की अपेक्षा अढ़ाई द्वीप समुद्र क्यों कहा गया है?

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र के अन्तर द्वीप को अपेक्षा भेद से स्पष्ट करें।

(ख) परिहार वि.चा. के स्थिति द्वार को अपेक्षा भेद से स्पष्ट करें।

(ग) कल्प किसे कहते हैं? नाम बतायें।

(घ) सूक्ष्म संपराय चा.–आकर्ष द्वार को अपेक्षा भेद से स्पष्ट करें।

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) बकुश–प्रव्रज्या द्वार।

(ख) पुलाक–स्थिति द्वार।

(ग) बकुश–आकर्ष द्वार।

(घ) निर्ग्रंथ–अंतर द्वार।

(ङ) स्नातक–काल द्वार।

(च) कषायकुशील–कर्म उदीरणा द्वार।

(छ) प्रतिसेवना–गति-पदवी-स्थिति।

(ज) कषाय कुशील-परिणाम–स्थिति द्वार।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) 'अप्रतिस्रावी' शब्द का क्या तात्पर्य है?

(ख) बकुश–यथासूक्ष्म किसे कहते हैं?

(ग) प्रतिसेवना–कर्म उदीरणा द्वार लिखें।

(घ) स्नातक–आहारक द्वार को अपेक्षा भेद से लिखें।

(ङ) भाव लिंग से क्या तात्पर्य है?

(च) कौन सा गुणस्थान सवेदी व अवेदी दोनों है?

(छ) कषाय कुशील में शरीर कितने व किस अपेक्षा से है?

(ज) कौन से निर्ग्रंथ पांच अनुत्तर विमान तक जा सकते हैं?

(झ) बकुश के उत्कृष्ट पर्यव से प्रतिसेवना के पर्यव जघन्य या उत्कृष्ट कितने होते हैं?

गीतिका (नियंठा दिग्दर्शन)–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखें– 2

(क) छठा गुणस्थान किन कारणों से बदलता है?

(ख) किन निर्ग्रंथ के चारित्र के पर्यव समान होते हैं?

(ग) कषायकुशील किस गुणस्थान में होता है तथा उसमें कितनी लेश्या, शरीर व समुद्घात पाये जाते हैं?

प्र. 7 कोई दो पद्यों को अर्थ सहित लिखें– 8

(क) इम छठो.....खोय।

(ख) साधु सूत्र.....में जोय।

(ग) निर्ग्रंथ.....छट्ठे जोय।

(घ) सूत्र तणी.....देवै रोय।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–स्पर्शनेन्द्रिय के विषय ***अथवा*** संवर के भेद 7वें से 14वें तक। 2

(ख) चतुर्भंगी–आश्रव किस कर्म का उदय व क्यों? ***अथवा*** किस निर्जरा के जीव कम व किस निर्जरा के जीव अधिक व क्यों? 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–जीव के छह भेद से लेकर 11 भेद तक ***अथवा*** सात गुणस्थान से लेकर 12 गुणस्थान तक। 3

(घ) तत्त्व चर्चा–विविध चर्चा–पर प्रथम छह प्रश्न व उत्तर लिखें ***अथवा*** पुण्य धर्म आदि एक या दो–पर प्रथम छह प्रश्न व उत्तर लिखें। 4

(ङ) कर्म प्रकृति–दर्शनावरणीय कर्म भोगने के हेतु ***अथवा*** दर्शन मोह की प्रकृतियों की कार्य एवं स्थिति लिखें। 4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश–सामान्य गुण की परिभाषा व उसके भेदों का वर्णन करें। ***अथवा*** आश्रव भेदों का वर्णन (दृष्टांत द्वार) के अंतर्गत करें। 4

(छ) जैन तत्त्व प्रवेश–प्रमाण द्वार–नय से प्रारंभ कर अंत तक लिखें। ***अथवा*** दव देवो.....शील आदरियो ..... नीम आंबादिक.....इन पद्यों को पूरा करें। 4

(ज) इक्कीस द्वार–अभाषक ***अथवा*** असंज्ञी। 4

(झ) बावन बोल–अठारह पाप स्थान का उदय, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम, निष्पक्ष छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन? ***अथवा*** जीव पारिणामिक के दस भेद कितने भाव? कितनी आत्मा? 4

(ञ) लघु दण्डक–देवों की स्थिति ***अथवा*** गति आगति द्वार पृथ्वीकाय, अपकाय से प्रारम्भ करते हुए संज्ञी मनुष्य तक लिखें। 4

(ट) पाँच दान–मनःपर्यव ज्ञान को क्षेत्रतः वर्णित करें ***अथवा*** श्रुत के समुच्चय रूप में भावतः में सम्पूर्ण आकाश के बीच..... रहता है तक वर्णित करें। 4